प्रश्नपत्र द्वितीय : प्रहसन, सट्टक एवं पालि

100 अंक

इकाई एक 20 अंक

मृच्छकटिक–महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8 वां (प्राकृत अंश मात्र–गद्य एवं पद्य)

इकाई दो 20 अंक

कर्पूरमंजरी – राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य)
सम्पा. डॉ रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974

इकाई तीन 20 अंक

प्राकृत प्रयोग एवं पालि

1. संस्कृत नाटकों के प्राकृत अंशों का भाषागत परिचय–10 अंक (प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमचन्द्र जैन, में संकलित नाटकों के प्राकृत अंश)

2. धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)–10 अंक

इकाई चार 20 अंक

सट्टक साहित्य एवं पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन एवं चरित्र–चित्रण

इकाई पाँच 20 अंक

भाषागत विवेचन

1. पठित ग्रन्थों का भाषागत विवेचन एवं मागधी प्राकृत की प्रमुख विशेषताऐं – 10 अंक

2. हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं. 287–302 (प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) – 10 अंक

नोट :– छः सूत्रों को देकर तीन सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है ।

सहायक पुस्तकें :

1 महाकवि शूद्रक – डॉ रमाशंकर त्रिपाठी

2 इन्ट्रोडक्शन, स्टडी आफ मृच्छकटिकम् – डॉ. जी. वी. देवस्थली

3 कर्पूरमंजरी, स्टेनकोनो (भूमिका)

4 आचार्य राजशेखर – डॉ. श्यामा वर्मा

5 प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ जगदीश चन्द्र

6 हेमशब्दानुशासन (हिन्दी व्याख्या) – श्री प्यारचन्द महाराज

7 अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

8 प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द जैन

9 पालि साहित्य का इतिहास – भरत सिंह उपाध्याय